ओम् शान्ति 12-04-12 मधुबन

वार्षिक मीटिंग के भाई-बहनों प्रति प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश – दादी गुल्ज़ार

आज बापदादा के पास सर्व मीटिंग के साथियों की ओर से याद-प्यार लेते हुए पहुँची तो क्या देखा कि आज बापदादा बहुत बिजी थे। बापदादा के सामने बहुत रंगबिरंगी हीरे थे और हर एक हीरे को बहुत प्यार से देख-देख बापदादा हर्षित हो रहे थे। मैं दूर से ही हर्षित होते आगे बढ़ती गई और सामने पहुँच गई। लेकिन बापदादा का ध्यान हीरों में था। थोड़ी हलचल के बाद बाबा की नज़र मेरे ऊपर गई और बाबा बोले, आओ मेरी होली, हैप्पी डायमण्ड आओ। क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज आपके विशेष निमित्त बच्चों की याद-प्यार लाई हूँ। बापदादा ने मुस्कुराते सभी का याद-प्यार स्वीकार किया। मैं बोली बाबा, आज आप बहुत बिजी हो! बाबा मीठा मुस्कुराते बोले, बच्ची आजकल बापदादा बच्चों के पुरुषार्थ की रफ्तार देख रहे थे। बच्चे सब हीरे तो हैं लेकिन तीन प्रकार के रत्न देख रहे थे। एक हैं - जो कितना भी, कैसे भी वायुमण्डल, परिस्थितियों की हलचल हो लेकिन उन्हों पर परिस्थितियों का प्रभाव नहीं पड़ता, सदा चमकते रहते हैं। दूसरे हैं जो कभी-कभी कोई न कोई शक्ति की अपने में कमजोरी होने कारण वायुमण्डल के प्रभाव के असर में आ जाते हैं। कभी अटेन्शन से मिटा भी देते, कभी प्रभाव में आ जाते। तीसरे हैं - जो कुछ छोटे, बड़े दाग पक्के हैं, मिटाते भी मिटा नहीं सकते। सोचते बहुत अच्छा हैं, यह करुंगा, यह होगा लेकिन संकल्प को प्रत्यक्ष परिवर्तन में लाने की शक्ति कम है। किसी न किसी संस्कार के कारण शक्तिहीन बन जाते हैं। ऐसे तीन प्रकार के हीरों को देख रहे थे। मैं बोली, बाबा परिवर्तन चाहते, उमंग होते, सोचते भी क्यों नहीं कर पाते हैं? तो बाबा मुस्कुराते बोले, बच्ची परिवर्तन की इच्छा होती है लेकिन साथ में चारों ओर की इच्छायें मेरा नाम, शान, मान भी होगा तो यह तो नहीं हो जायेगा, यह व्यर्थ संकल्प मिक्स होने के कारण शुभ संकल्प की शक्ति को दबा देते हैं इसलिए प्रत्यक्ष परिवर्तन संकल्प तक ही रह जाता है। समर्थ संकल्प और व्यर्थ संकल्प दोनों के टग आफ वार में ही रह जाते हैं। बापदादा ऐसे विशेष बच्चों को विशेष रहमदिल बन हिम्मत की शक्ति देते हैं लेकिन वह अपनी ही उलझन में मस्त होते हैं।

बापदादा ने देखा विशेष कारण एक-दो को देखना और एक-दो को हद की प्राप्ति में कॉपी करना यह इतना, मैं क्यों कम रहूँ... यह लहर ज्यादा दिखाई देती है। फॉलो फादर के बजाए, फालो एक-दो को करते हैं। बापदादा बच्चों की कमी भी जानते लेकिन विशेषता देख विशेषतायें आगे बढ़ाते हैं, इस विधि से ही स्व-परिवर्तन सहज हो सकता है। बच्चे, नॉलेजफुल ज्यादा हैं लेकिन पावरफुल हो परिवर्तन नहीं करते। बापदादा यही चाहते हैं कि अब समय प्रमाण स्व के ऊपर अटेन्शन जरूरी है।

इसके बाद मैंने बोला, हमारी दादियों को यही संकल्प है कि इस वर्ष बापदादा को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करना ही है। बापदादा मुस्कुराते बोले, आप मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों के संगठन के लिए क्या बड़ी बात है! लेकिन यह ध्यान रहे कि बाप की प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा तो अकेला बापदादा प्रत्यक्ष होगा व बच्चों सहित प्रत्यक्ष होगा! तो हर बच्चे को पहले स्वयं में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करनी होगी तब बापदादा की प्रत्यक्षता होगी। बाप साथ बाप समान बच्चे भी चाहिए तब नगाड़ा बजेगा – हमारा बाप आ गया, हमारे पूर्वज आ गये।

इसके बाद बापदादा सब बच्चों को बहुत पावरफुल और स्नेह की दृष्टि दे रहे थे और बोले, हर बच्चे को दिलाराम बाप तख्तनशीन देखते हैं। हर एक की विशेषता पर बलिहार जाते हैं। ऐसे कहते बाबा ने दादी जानकी को और कुछ बड़ी बहिनों को याद किया तो वह इमर्ज हो गई। बापदादा एक एक से बहुत स्नेह स्वरूप से मिले। बिल्कुल प्यार का वातावरण बहुत सुन्दर हो गया। थोड़े समय यह मिलन मनाने के बाद बाबा अच्छा बच्ची कह सबको बहुत लवलीन होने की दृष्टि दे रहे थे। सब दृष्टि में समाते साकार वतन पहुंच गये। हमें भी बाबा ने दृष्टि में समाते साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति।